तीन दौर मौन के: राष्ट्र-निर्माण को समर्पित

बहुत लोग सोचते होंगे कि हम ईसाई पुरोहित, धर्मबहनें या विश्वासी गरीब क्षेत्रों में या झुग्गी झोंपड़ियों में जाकर इसलिए सेवा करते हैं ताकि हम उन्हें धर्मपरिवर्तन करके ईसाई बना सकें...क्योंकि आज की इस मतलबी दुनिया में कौन विश्वास कर सकता है, कि **मतलब के बिना भी एक प्यार होता है और कैमरे की सुर्खियों के बिना भी एक सेवा होती है|** उन लोगों को हम यह बताना चाहते हैं कि हम ईसाई ये सब इसलिए करते हैं क्योंकि हमारे प्रभु ईसा-मसीह ने हमें सिखाया है कि **"सेवा ही सच्ची पूजा है और पड़ोसी प्रेम ही ईश-प्रेम है"**, और **"चंगों को नहीं, बीमारों को वैद्य की ज़रूरत है"|**

पिछले महीने सभी समाचार पत्रों, न्यूज़ चैनल्स में हर जगह ये न्यूज़ उजागर हो रही थी, **"2 कैथोलिक नन्स हिरासत में"|** शायद इसी घटना के बाद 'कैथोलिक नन्स' शब्द सुर्ख़ियों में आया|

हम 'कैथोलिक नन्स' आखिर कौन हैं और क्या है हमारा जीवन....आप सब में से कुछ लोगों ने हमें अपने स्कूलों में, या अस्पतालों में या रास्ते में कभी देखा होगा...ज्यादा गौर भी नहीं किया होगा...शायद बहुत से लोग नहीं जानते होंगे...लेकिन वे अपने बच्चों से पूछें जो हमारे विद्यालयों में पड़ते हैं...उन मरीजों से पूछें जो हमारे चिकित्सालयों में आते हैं....**क्या कभी किसी एक के साथ भी हमने कोई धोखा किया है? किसी को जात, धर्म या संप्रदाय पूछ कर भेदभाव किया है? किसी एक का भी धर्म-परिवर्तन किया है?**

हम कैथोलिक नन्स कोई विदेशी नहीं, इसी भारत माँ की बेटियां हैं....हमारे भी माँ-बाप हैं, परिवारजन हैं, घर-बार हैं; लेकिन अपने परिवार, अपने घर, अपने स्वप्न, अपना सब कुछ त्यागकर ईश्वर के आह्वान का हमने अपनी किशोरावस्था में ही उत्तर दिया...यही हमारी सेवा की नींव हैं। इसलिए हम **ब्रह्मचर्य, सादगी, प्रार्थना और सेवा का जीवन गृहण कर** दीन-दुखियों की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित करते हैं|

हमारी माँ भारत-भूमि में, जब कोई भूखा सोता है, तो कहीं कोई कैथोलिक नन्स खामोशी से खाना परोसती हैं, रोज़गार की ट्रेनिंग देती हैं। जब कोई बच्चा अनाथ होता है, तो कहीं कोई कैथोलिक नन्स उसकी हँसी लौटाती हैं। जब कोई पिछड़ा क्षेत्र शिक्षा के उजाले से वंचित होता है, तो कहीं कोई कैथोलिक नन्स उसकी जिंदगी में उम्मीद जगाती हैं। चाहे हमारा खुद का बूढ़ा पिता घर में अकेला हो, पर हम आपके माता-पिता की अपने वृद्धाश्रमों में बड़ी निष्ठां से सेवा करते हैं | हमने बच्चे पैदा नहीं किये, पर अपने स्कूलों में हजारों नन्हे बच्चों की सुरक्षा और उन्नति के लिए हम दिन-रात मेहनत करते हैं, और उनके लिए अपनी जान तक देने के लिए तैयार रहते हैं...**और ये सब कार्य न तो किसी वोट के लिए, न ही किसी धर्मांतरण के लिए – बल्कि केवल और केवल उस प्रभु के प्यार और मानवता की सेवा के लिए हम करते हैं।**

दोस्तों, यह सत्य है कि हमारे देश में हम ईसाई मात्र दो प्रतिशत हैं, पर हमारी सेवा ने कई लाखों जीवन बदल डाले हैं – फिर चाहे वे हिन्दू हों, सिख हों, मुस्लिम हों, या कोई अन्य सम्प्रदाय। हमने कभी धर्म को हथियार नहीं बनाया, बल्कि प्रेम का दूत बनकर परमपिता का सन्देश दिया कि **"ईश्वर तुम्हें प्रेम करता है"।** सन 1951 में 2.3% ईसाई थे, और आज 2 प्रतिशत से कम रह गए हैं, और उत्तर भारत में तो केवल 0.9 हैं....**यदि धर्मांतरण की बात सही होती, तो ये कैसे संभव था?**

मौन रूप से, पूरी ईमानदारी से हम कैथोलिक नन्स ने सदियों से अपने सेवाकार्यों द्वारा अपने प्यारे भारत का निर्माण किया है, इसे सुन्दर और समृद्ध बनाया है...**ये हमारी मौन-सेवा का प्रथम चरण था|** इस दौर में आपने हमें सम्मान दिया, स्वीकार किया, और अपना प्रोत्साहन भी दिया, जिसके हम आभारी हैं|

पर इन्हीं प्रेम के दूतों पर, बिना किसी ठोस प्रमाण के आरोप लगाए जाने लगे – ऐसे आरोप जो न केवल हमारे चरित्र को ठेस पहुँचाते हैं, बल्कि देश की हजारों कैथोलिक नन्स की सेवाभावना को भी कटघरे में खड़ा करते हैं। **अब हमारी मौन यात्रा का दूसरा दौर आरम्भ हुआ**...जब हमारी वर्षों की सेवा को गलत मायने दिए

जाने लगे, हमारी निस्वार्थ मेहनत और समर्पण को बदनाम किया जाने लगा, हमारे विरुद्ध ऐसे-ऐसे आरोप लगाए जाने लगे जिनका सच्चाई से दूर-दूर का वास्ता नहीं है| हमें कहा गया कि हम धर्मांतरण कराने आए हैं, हम देशद्रोही हैं, हम डीमक हैं और हम मानव तस्कर हैं, यहाँ तक कि जिस पावन क्रूस पर मसीहा ने अपनी जान तक दे दी, उस क्रूस को लज्जा का, नफरत का चिन्ह घोषित कर दिया गया|

वे पवित्र आत्माएँ, जिन्होंने अपना पूरा जीवन पीड़ितों, गरीबों, उपेक्षितों की सेवा में समर्पित कर दिया...उन्हें यातनाएँ दी गईं, मार डाला गया, कैद कर लिया गया, निशाना बनाया गया...सिस्टर रानी मरिया, फादर स्टैन स्वामी, फादर येसुदास, ग्राहम स्टेन्स और न जाने कितने ही पादरी और ख्रीस्तीय विश्वासी आज भी जेलों में बंद पड़े हैं...कितने ही गिरजाघर बंद कर दिए गए हैं...कितनों पर हमले हुए...कितनों को तोड़-फोड़ कर राख कर दिया गया...यह सूची बहुत लम्बी है|

परन्तु अब मौन का तीसरा दौर आया है| यह दौर न तेरा है, न मेरा है, न हमारा है, न उनका है...यह जीवंत ईश्वर का दौर है, जिसे अपने बेगुनाह बन्दों की रक्षा करना बखूबी आता है...**इस दौर की शुरुआत प्रिय सिस्टर प्रीति मेरी और सिस्टर वंदना की उस मौन तस्वीर ने की है**...जो मीडिया के हर चैनल पर उभर कर आई...जहाँ ये कैथोलिक नन्स बिलकुल शांत और नम्र रही...बेहद अपमान और प्रताड़ना के पलों में भी मौन पीड़ा सहती रहीं, इनके इस मौन ने भारत की आत्मा को झकझोड़ दिया है...सलाम करते हैं प्रिय सिस्टर प्रीति मेरी और सिस्टर वंदना आपको...कहाँ से लाये आप ये मौन की शक्ति... प्रत्याक्रमण नहीं किया, पलट कर जवाब नहीं दिया...चेहरे पे नफरत और आक्रोश नहीं दिखा...लेकिन आपके इस धैर्य ने विश्व को जगा दिया...आपके साहस ने हमें शक्ति दी है...कि अब हम मौन तोड़े और सच्चाई के लिए आवाज उठाएँ| आज हम न केवल बेबुनियाद आरोपों के ख़िलाफ मोर्चा खोल रहे हैं, बल्कि उस मानवीय सेवाभाव का भी सम्मान कर रहे हैं, जिसकी मिसाल हमारी कैथोलिक नन्स सदियों से दे रही हैं।

मैं तेरी ही मिटटी का पुतला हूँ, तेरे ही जिगर का टुकड़ा हूँ,
मुझे पराया न कर ऐ भारत, मैं तेरा सबसे वफादार हिस्सा हूँ|

हमारे प्रिय हिन्दू भाईयों और बहनों, हम आपसे विनम्र निवेदन करते हैं – हिंदू धर्म की गहराई, उसकी विशालता, उसकी गरिमा और सहिष्णुता पर आईये जरा विचार करें। किस प्रकार यह पावन धर्म सदियों से प्रेम, एकता, और विविधता का संदेश देता आया है। **यह विविधता ही भारत की आत्मा और ताकत है –** भाषाओं की विविधता, पर्वों की विविधता, भूगोल की विविधता, मौसम की विविधता, धर्मों की विविधता, और संस्कृतियों की विविधता।

यदि हम सब मिलकर, नफ़रत की आग को दोस्ती की ठंडी छाँव से आबाद करेंगे, तो हमारी भारत माँ फिर से वही सुन्दर धरती बनेगी, जहाँ धर्म-परिवर्तन का प्रश्न ही नहीं उठता, **क्योंकि हम भारतीय हर मानव में, हर धर्म में, उस परमपिता ईश्वर के रूप को पहचानने की क्षमता रखते हैं।**

मंदिर में दाना चुग कर चिड़िया, मस्जिद में पानी पीती है,
मैने सुना है राधा की चुनरी, कोई सलमा बेगम सीती है
एक रफ़ी था महफ़िल में, रघुपति राघव गाता था,
एक प्रेमचंद जो, बच्चों को ईदगाह सुनाता था
यही मेरी यादों का भारत है, और यही मेरे सपनों का भारत भी|

जय हिन्द, जय भारत माँ| Happy Teachers' Day Friends!
Sr. Rekha Punia, UMI